International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(II), January- March, 2025, pp. 73-76

महिला सशक्तिकरण में सोशल मीडिया की भूमिकाः भारतीय समाज के संदर्भ में

श्रीमति सविता भदौरिया*

सार

सूचना एवम संचार तकनीक के विकास के फलस्वरूप इंटरनेट और सोशल मीडिया विकासशील देशों में सभी वर्गो के लिए शिक्षा, रोजगार, मनोरंजन, व स्वास्थ सम्बंधी आवश्यकताओं की पूर्ति का सशक्त माध्यम बन गया है। भारत जैसे परंपरागत देश में सूचना प्रौद्योगिकी के इस क्रांतिकारी नवाचार ने पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को स्वतंत्र अभिव्यक्ति का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम प्रदान किया है। यह कथन अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा, कि सोशल मीडिया ने मानव समाज के लिए आधारभूत आवश्यकता के रूप में स्थान बना लिया है। सन 2000 के बाद सूचना तकनीकी में हुए नवाचार से फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, व्हाट्सएप, टेलीग्राम तथा इंटरनेट ने महिला सशक्तिकरण एवं विकास के लिए भारतीय समाज की परम्परागत मनोवृति को भी परिवर्तित कर दिया है। महिलाओं के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन एवम सशक्तिकरण में सोशल मीडिया की विशेष भूमिका है। प्रस्तुत शोधपत्र भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण में सोशल मीडिया के प्रभाव का मूल्यांकन पर केंद्रित है।

शब्दकोशः *सोशल–मीडिया,इंटरनेट, प्रौद्योगिकी, सामाजिक – सुरक्षा, साइबर बुलिंग, स्टॉकिंग, पोर्नोग्राफी।*

प्रस्तावना

भारत जैसे विकासशील देशों के सामाजिक परिवर्तन में सोशल मीडिया की विशेष भूमिका है। सत्तर के दशक में जब सूचना प्रौद्योगिकी का विकास भारत में हुआ, तब यह प्रौद्योगिकी अभिजात वर्ग के प्रभुत्व में थी,क्योंकि यह तकनीक अत्यंत महंगी थी। जिसमें भी देश की आधी आबादी की भूमिका नगण्य थी। आज सोशल मीडिया व्यक्ति के समाजीकरण की प्रमुख द्वितीयक संस्था बन गया है। जिसने समाज के सभी वर्गों को प्रभावित किया है और संपूर्ण विश्व को एक वैश्विक गांव में परिवर्तित कर दिया है। समाज के विभिन्न भागों में सोशल मीडिया का प्रयोग स्थानीय पहचान को व्यक्त करने, नवीन सामाजिक संबंधों को बनाने, तथा सामाजिक मान्यताओ को चुनौती देने के लिये किया जाता है। सोशल मीडिया और इंटरनेट ने आज घरेलू कामकाजी महिलाओं को भी दुनिया से जोड़ दिया है। जो पहले समस्त विश्व के बारे में अनभिज्ञ थी। 2000 के बाद सूचना प्रौद्योगिकी में आए क्रांतिकारी नवाचार इंटरनेट तकनीक से संचालित स्मार्टफोन, फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, व्हाट्सएप जैसे साधनों ने महिला सशक्तिकरण व महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास में बाधक परंपरागत पुरुष प्रधान भारतीय संस्कृति की संकीर्ण मनोवृतियों को भी प्रभावित किया है। विभिन्न समूह में सामाजिक अंतःक्रिया का अप्रत्यक्ष किंतु सशक्त माध्यम बन गया है सोशल मीडिया।

---

* सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, स्व. राजेश पायलट राजकीय महाविद्यालय, बांदीकुई, राजस्थान।

शोध पद्धति

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोधपत्र द्वितीयक तथ्य पर आधारित है इसके लिए विभिन्न शोध पत्रिकाओं, समाचार–पत्रों, तथा इंटरनेट आधारित सूचनाओ का अध्ययन किया गया है।

सोशल मीडिया और भारतीय महिलाएं

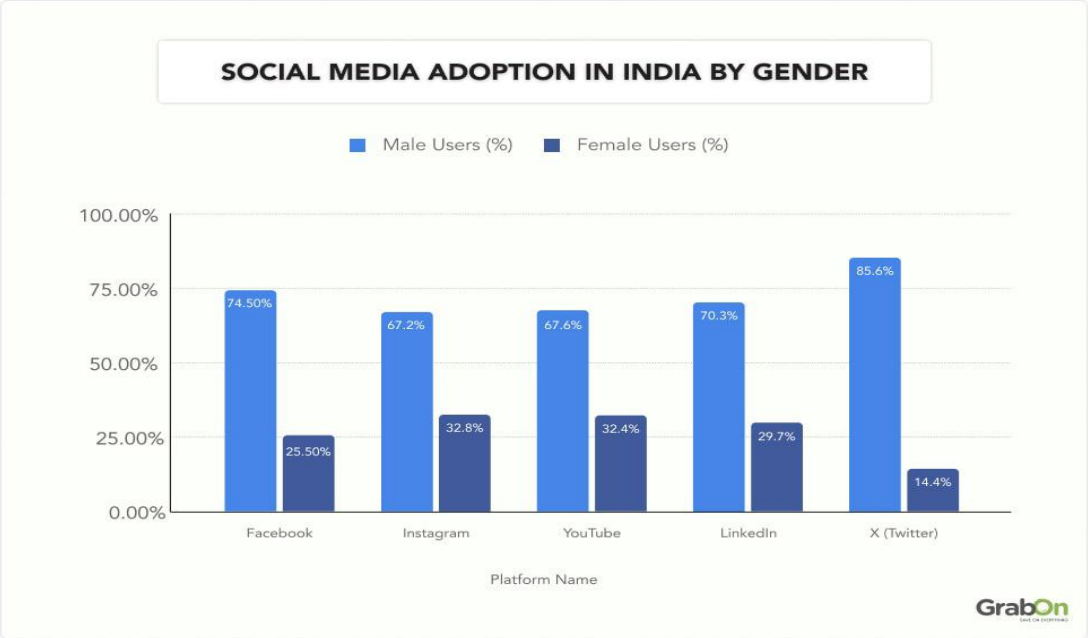

Source: GrabOn Report 2023

ग्रैब ऑन संस्था के 2024 के आंकड़ों के अनुसार भारत में सोशल मीडिया यूजर्स की जनसंख्या 86 करोड़ 20 लाख में से 31.4 प्रतिशत महिलाएं सोशल मीडिया का प्रयोग करती हैं। इसमें भी सर्वाधिक 32.8 प्रतिशत इंस्टाग्राम, 32.4 प्रतिशत यूट्यूब, 29.7 प्रतिशत लिंक्डइन, 25.5 प्रतिशत,फेसबुक, 14.4 प्रतिशत एक्स आदि का प्रयोग करती हैं। सोशल मीडिया ऐसा मंच है जो समाज को आभासी तथा वास्तविक समुदायों में विभाजित कर संयोजक का कार्य करता है, उपयोगकर्ताओं के विशेष विचारों, टिप्पणी, वीडियो, फोटो को पोस्ट या शेयर करके अनुमानों, परिकल्पना एवं संभाव्य दृश्यों के द्वारा सामाजिक स्वीकृति के लिए उत्प्रेरित करने वाला मंच है। वर्तमान में सोशल मीडिया के माध्यम से दैनिक गतिविधियों एवं सूचनाओं को सामाजिक रूप से साझा करने एवं जानकारी बढ़ाने का जनसमुदाय में फैशन बन गया है। प्रारंभ में सोशल मीडिया का उद्देश्य समान विचार वाले व्यक्तियों से मित्रता व वार्तालाप करना ही था। वर्तमान में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक एकीकरण, सामुदायिक अभियान, विज्ञापन एवं पारिवारिक संगठन के विविध पक्षों का सशक्त माध्यम बन गया है। वर्तमान में शिक्षा स्वास्थ्य, रोजगार,सामाजिक एकीकरण, सामुदायिक अभियान, विज्ञापन एवं पारिवारिक संगठन के विविध पक्षों का सशक्त माध्यम बन गया है। सोशल मीडिया विचार व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए विश्वस्तरीय साधन है जिससे पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं सर्वाधिक प्रभावित हुई है। महिलाओं ने विश्व स्तरीय मंच से स्थानीय मुद्दों को विश्व पटल पर मुखरित कर जन आंदोलन में बदल दिया। परंपरागत पितृ प्रधान समाज में महिलाओं को घरेलू कार्य, चारदिवारी तक सीमित कर सामाजिक–सांस्कृतिक प्रतिबंधों के माध्यम से उनकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाकर विकास को सीमित कर दिया गया। वर्तमान में तकनीकी विकास इंटरनेट एवं सोशल मीडिया ने महिलाओं की आवाज एवं अभिव्यक्ति को आभासी दुनिया के समक्ष सार्वजनिक करने का सशक्त मंच प्रदान किया। जहां महिलाएं अपनी पसंद–नापसंद,कार्य–कौशल अभिरुचि, विशिष्ट गुणों को स्वतंत्र

रूप से समाज के समक्ष प्रस्तुत कर आत्मविश्वास अभिवृद्धि,स्वाभिमानी जीवन शैली, आर्थिक उन्नयन की ओर अग्रसर हैं। परंतु आज भी भारत जैसे देश में ग्रामीण जनसंख्या की बहुलता, डिजिटल साक्षरता की कमी,तकनीकी जोखिम के ज्ञान का अभाव, साइबर अपराध,जैसी नकारात्मक घटनाएं सर्वाधिक महिलाओं को ही प्रभावित कर रही हैं। भारत जैसे सामाजिक सांस्कृतिक विविधताओं से परिपूर्ण देश में निर्धनता भाषा भेद जैसी कुछ बाधायें भी हैं जिनके कारण सभी वर्गों के लिए सूचना व संचार तकनीकी सामान्य नही है।

महिला सशक्तिकरण में सोशल मीडिया की भूमिका

परिवार से लेकर विश्व स्तर पर सोशल मीडिया ने महिलाओं में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता व समानता के मौलिक अधिकार को वास्तविक रूप से क्रियान्वित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान में विश्व की सर्वाधिक युवा शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाले भारत देश में आधी आबादी के बहुआयामी पक्ष को सोशल मीडिया ने प्रभावित किया है। महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के नए प्रतिमान जैसे–ब्लॉग, ऑनलाइन शॉपिंग सेंटर, ऑनलाइन टीचिंग, वर्क फ्रॉम होम, हॉबी क्लासेस के माध्यम से नया रोल मॉडल के रूप में आर्थिक सशक्तिकरण, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता की भावना जाग्रत की है। महिलाओं में राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम की जानकारी व्यक्तिक ज्ञान व अनुभव को साझा करने में, महिलाओं के विरुद्ध हिंसक अपराध, बलात्कार आदि में सोशल मीडिया ने जनता की आवाज बनकर सरकार पर दोषियों के प्रति कार्रवाई करने में दबाव बनाकर महिला सुरक्षा संबंधी शक्तिशाली नवीन कानून निर्माण में भूमिका निभाई है। महिलाओं में अपनी समस्याओं को समझकर उसका समाधान निकालने में इंटरनेट पर सोशल मीडिया का प्रयोग बढ़ रहा है। हालांकि तकनीकी का अधूरा ज्ञान तथा साइबर अपराध ने तकनीकी क्रांति के लाभों को भोगने में बाधाएं भी उत्पन्न की है।

सोशल मीडिया की नकारात्मक भूमिका

सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति से विश्व जगत पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव हुए हैं। सोशल मीडिया व इंटरनेट ने महिलाओं को अभिव्यक्ति का सशक्त मंच देने के साथ उत्पीड़न के नवीन मार्ग खोल दिए हैं। आज देश में पुरुषों में 82.14 प्रतिशत व महिलाओं की साक्षरता 65.6 प्रतिशत है (2011 जनगणना रिपोर्ट)। अर्थात डिजिटल साक्षरता के अभाव में महिलाओं को तकनीकी ज्ञान की पूर्ण जानकारी नहीं है। जीएसएमए 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में साइबर अपराध की शिकार 26 प्रतिशत महिलाओं द्वारा ही शिकायत की गई है। जबकि 16 प्रतिशत ने कोई शिकायत नहीं करना चाहती हैं, और अपराध की शिकार 25 प्रतिशत महिलाओ को अपने प्रति हुए साइबर अपराध के विरुद्ध की जाने वाली सुरक्षात्मक कार्यवाही का ज्ञान ही नहीं है। सोशल मीडिया ने साइबर अपराध, ऑनलाइन उत्पीड़न में महिला व पुरुष दोनों की निजता को समाप्त कर दिया है। साइबर बुलिंग, स्पूफिंग, साइबर स्टॉकिंग, पोर्नोग्राफी, आइडेंटिटी थेफ्ट, डार्क वेबआदि के द्वारा पीड़ितों में अधिकांशतः महिलाएं होती हैं । सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव देखते हुए ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी द्वारा 2024 का चर्चित शब्द 'ब्रेन रॉट' घोषित किया गया है जिसका अर्थ है अधिक समय तक सोशल मीडिया साइट्स पर अनावश्यक कंटेंट देखना। जिसके प्रभाव से मानसिक विसंगति और असहिष्णुता व उन्माद का प्रसार होता है। एंटी डिफेमेशन लीग की रिपोर्ट के अनुसार 2024 में सोशल मीडिया पर ऑनलाइन ह्रासमेंट की घटनाएं 22 फीसदी बढ़ी हैं। प्यू रिसर्च के अनुसार सोशल मीडिया फेक सूचना तथा गलत सामग्री प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सोशल मीडिया के उभरते दुष्प्रभाव से बचने के लिए फिनलैंड,न्यूजीलैंड,स्वीडन जैसे देशों ने भी डिजिटल साक्षरता को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है। ऑक्सफोर्ड इंटरनेट संस्थान के शोध के अनुसार सोशल मीडिया पर प्रमाणिक जानकारी के मुकाबले फेक न्यूज 6 गुना तीव्रता से प्रसारित की जाती है।

सुझाव

- महिला सशक्तिकरण के साथ महिला सुरक्षा को भी जन अभियान बनाया जाना चाहिए।
- अपराधियों के खिलाफ कठोर कानून का पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

- महिलाओं में डिजिटल साक्षरता के माध्यम से सोशल मीडिया के सकारात्मक व नकारात्मक प्रयोग का व्यवहारिक ज्ञान प्रारंभिक शिक्षा के साथ ही दिया जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय साइबर अपराध रिर्पोटिंग पोर्टल के प्रति जन जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

जीवन और स्वतंत्रता संबंधी मानव अधिकार से बुनियादी आवश्यकताओं से वंचित महिलाओं में जागरूकता आई है। बचपन से ही महिला सशक्तिकरण के साथ महिला सुरक्षा से संबंधित कानून की शिक्षा भी विद्यालय शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जानी चाहिए जिससे भी सामाजिक धोखाधड़ी का शिकार ना हो पाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Kashyap Geeta(2014)Role of alternative media in empowerment of women, article, mass communication and journalism july23,2014 (online)
2. Parkinson,D& Zimmerman,M(1995), American general of community psychology oct,1995(online).
3. Jayaseelan R, Brindha D, Chitra Lakshmi K S (2019), “Asian Journal of Multidimensional Research”, AJMR, Vol. (1) 2019, Page 214-224
4. GrabOn Report 2023
5. GSMA Report 2023
6. Miller, Daniel, et al. “What Is Social Media?” How the World Changed Social Media, 1st ed., vol. 1, UCL Press, 2016, pp. 1–8. JSTOR, https://doi.org/10.2307/j.ctt1g69z35.8. Accessed 11 Dec. 2024.
7. मिश्रा आशीष, चौहान संगीता, (2023) महिला सशक्तिकरण पर डिजिटली करण का प्रभाव, आईजेएफएमआर वॉल. 5(5), 2023.
8. दैनिक भास्कर रविवार 8 दिसम्बर 2024 पेज न. 8

❖◆❖